अध्याय – 8

NRrhlx< jkT; dk foRr ,o mldh iujpuk dk lkjk"k ¼2005&06 l 2009&10½

8.1.0 राज्य वित्त की भूमिका :

8.1.1 ***NRrhlx< jkT; foRr vk;kx*** के प्रतिवेदन के इस भाग में ***8 v/;k; g***, जिनमें से ***4 e ,lh lkekxh*** प्रस्तुत की गई है, जो प्रतिवेदन के इस भाग के प्रमुख विषय ''***NRrhlx< jkT; foRr ,o mldh iujpuk***'' के लिये पृष्ठभूमि का कार्य करेगी। अंतिम तीन अध्यायों में, आयोग के ***fopkjkFk fo"k;k*** की अपेक्षानुसार, राज्य के वित्त का उनके विविध आयामों में अध्ययन, राज्य वित्त की समीक्षा, राजस्व एवं व्यय के आदर्शक आधार पर पूर्वानुमान तथा छत्तीसगढ़ सरकार के वित्त की पुनर्रचना का समावेश किया गया है।

8.1.2 राज्य वित्त के अध्ययन की पृष्ठभूमि के रूप में यह सर्वथा प्रासंगिक होगा, कि ***jkT; foRr vk;kx ¼jk-fo-vk-½*** के गठन, उसकी संवैधानिक भूमिका, एवं उसके विचाराधीन विषयों की संक्षिप्त चर्चा की जाय। संवैधानिक अपेक्षाओं के अनुसरण एवं छत्तीसगढ़ राज्य वित्त अधिनियम, 2003 की धारा 3 के अंतर्गत, ***iFke foRr vk;kx dk xBu vxLr 2003 e fd;k x;kA*** आयोग को अपना प्रतिवेदन 31 दिसम्बर, 2004 तक प्रस्तुत करना था, परन्तु बाद में यह अवधि दिसम्बर 2006 और फिर ***viy 2007*** तक बढ़ा दी गई।

8.1.3 अन्य विषयों के साथ–साथ रा.वि.आ. के विचारार्थ विषयों में ये कार्य शामिल हैं: राज्य सरकार से स्थानीय निकायों को आदर्शक आधार पर उनकी आवश्यकताओं का मूल्याकंन करने के बाद, राशियों के अंतरण पैकेज की अनुशंसा करना तथा साथ ही ***2005&06 l 2009&10*** तक की पाँच वर्ष की अवधि के लिये, विभिन्न स्थानीय निकायों के बीच उनके आबंटन के लिये सुझाव देना। आयोग से यह भी

अपेक्षा की गई है,कि वह स्थानीय निकायों के साधनों में वृद्धि हेतु उनके बीच लम्बवत् एवं क्षैतिज असंतुलनों की समस्या का अध्ययन करने के बाद उपाय सुझायेगा। कार्यात्मक एवं राजकोषीय विकेन्द्रीकरण पर उनके संभावित प्रभावों के संदर्भ में ये कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। चूँकि राज्य के स्थानीय निकायों के वित्त–पोषण के लिये राज्य सरकार ही प्रमुख अधिकरण है, अतएव रा.वि.आ. से, उसके विचाराधीन विषयों के अंतर्गत, राज्य सरकार के वित्त का आदर्शक आधार पर मूल्यांकन करने, प्रक्षेपण अवधि के लिये राजस्व एवं व्यय के पूर्वानुमान तैयार करने, तथा राज्य वित्त की पुनर्रचना हेतु सुझाव देने की भी अपेक्षा की गई है। ***ifronu dk ;g [k.M fopkjk/khu fo"k;k d ml Hkkx dk v/;;u djrk g] ftldk lc/k jkT; foRr dh leL;kvk l gA***

8.1.4 विचारार्थ विषयों में वर्णित कार्यों को प्रारंभ करते समय रा.वि.आ. को अनेक समस्याओं से निपटने के लिये ***viuk nf"Vdk.k ,o viuh dk;fof/k*** विकसित करना आवश्यक था। आयोग ने यह कार्य इस प्रतिवेदन के ***f}rh; v/;k;*** में संपन्न किया है।

8.1.5 भारत की संघीय व्यवस्था में प्रत्येक पांच वर्ष बाद नियुक्त ***dUnh; foRr vk;kx*** की अनुशंसाओं पर, केन्द्र से राज्यों को, तथा अब स्थानीय निकायों को भी, काफी साधनों का हस्तांतरण होता है। अतएव यह सर्वथा उचित होगा, कि इन हस्तांतरणों की पर्याप्तता, इनकी रचना, हस्तांरणों का राज्य वित्त पर, विशेषतयः छत्तीसगढ़ राज्य के वित्त पर प्रभाव, स्थानीय निकायों को साधनों का अंतरण एवं उनके बीच उनका आबंटन, तथा भारत की संघीय संरचना में राज्य सरकार एवं स्थानीय निकायों द्वारा प्राप्त ***jktdk"kh; Lok;Rrk ,o jktdk"kh; fodUnhdj.k*** की सीमा, की समीक्षा की जाय। इस प्रतिवेदन के ***rrh; v/;k;*** में इन सभी विषयों पर चर्चा की गई है।

8.1.6 चूँकि राज्य की अर्थव्यवस्था एवं विभिन्न क्षेत्रों में उसका विकास ही स्थानीय सरकारों एवं राज्य सरकार को साधन जुटाने के लिये आर्थिक आधार प्रदान करता है, अतः ***jkT; dh vFk0;oLFkk*** की, उसके विभिन्न आयामों में, त्वरित समीक्षा

आवश्यक हो जाती है। इस समीक्षा से ही हमें, राज्य की साधन अंतःशक्ति एवं उनके दोहन की उसकी क्षमता की पृष्ठभूमि में राज्य की प्राथमिकताओं एवं उनकी पुनर्रचना की आवश्यकता की जानकारी मिलती है। ***jk-fo-vk-*** ने यह कार्य प्रतिवेदन के **pkFk v/;k;** में निष्पादित किया है।

8.2.0 राज्य सरकार का वित्त :

8.2.1 अगले ***rhu v/;k; jkT; foRr*** से संबंधित हैं तथा ***jkT; foRr dh leh{kk]*** उनके ***iokueku*** एवं उनकी **iujpuk** इन तीन अध्यायों की विषय सामग्री है।

8.2.2 राज्य वित्त की समीक्षा केन्द्र एवं राज्यों के वित्तीय निष्पादन के परिपेक्ष्य में की है। चूँकि छत्तीसगढ़ नये राज्य का गठन 1 नवम्बर 2000 को किया गया था तथा पूर्ण वित्तीय वर्ष के लिये राज्य का प्रथम बजट 2001–02 के लिये प्रस्तुत किया गया था, अतः राज्य वित्त की हमारी समीक्षा का आधार पाँच वर्ष की अल्पावधि ***2001&02 l 2005&06 ¼l-v-½*** संबंधी वित्तीय समंक ही हो सकते थे। हम स्वीकार करते हैं, कि राज्य वित्त की उन्नत तकनीकों पर आधारित, किसी अर्थपूर्ण समीक्षा के लिये पांच वर्ष की अवधि अत्यंत कम है, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर हैं, जिनके आधार पर हमने अपनी समीक्षा की है। राज्य के पास अवसर था, कि वह अपने ***i'kkldh; <kp*** को पुष्ट एवं पुनर्गठित करे। उसे अपनी कर संरचना, व्यय प्रकृति एवं सार्वजनिक ऋण में ढांचागत परिवर्तन लाने का लाभ, तथा उन पुरानी बजट तकनीकों एवं प्रारूपों को बदलने की स्वतंत्रता, जिन्हें उसने पूर्व राज्य से विरासत में पाया था, भी उपलब्ध थी। समीक्षा करते समय हमने यह जानने का प्रयास किया है, कि राज्य ने कहां तक इन मामलों में पहल की है।

8.2.3 ***jkT; foRr dh gekjh leh{kk*** से हमें 2001–02 से 2005–06 की पांच वर्ष की अवधि में, ***dN egRoi.k jktdk"kh; ladrdk d vk/kkj ij] jkT; d jktdk"kh; fu"iknu d ln< ,o detkj {k=k dk fpfUgr dju è lgk;rk feyhA ge dfri; LoLFk rFkk lkFk gh dN vLoLFk iof̀Rr;k fn[kkbl nhA LoLFk iof̀Rr;k dk cuk; j[ku ,o vkj ln< dju rFkk vLoLFk iof̀Rr;k dk jkdu ,o mUg myVu dh vko';drk gA***

8.2.4 राज्य के राजकोषीय निष्पादन में दृष्टिगत प्रवृत्तियों में से प्रमुख हैं, ***l-jk-?k-m- d ifr'kr d :i e] Lo;: d dj jktLo] Lo;: d xj&dj jktLo ,o dy jktLo e] fopkjk/khu vof/k e] c<rh gbl iofRrA dj l-jk-?k-m- vuikr]*** जिसे ***jktdk"kh; fu"iknu*** का महत्वपूर्ण मापक माना जाता है, में वृद्धि हुई है तथा यह 2001–02 के 6.75% से बढ़कर 2005–06 में 7.94% हो गया। इसी अवधि में ***dy Lo;: d l/kuk dk vuikr*** 9.19% से बढ़कर 10.50% हो गया। अधिकांश राज्यों की तुलना में ये संकेतक बेहतर हैं, ***XIIO*** वित्त आयोग के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य का 1999–2000 से 2001–02 का ***vklr dj l-jk-?k-m- vuikr*** 6.38% था, जो अनेक राज्यों मध्यप्रदेश सहित जहाँ यह 5.49% था, की तुलना में अधिक था। हमारी स्थिति सुखद है तथा इसे बनाये रखने एवं इसमें सुधार करने की जरूरत है। ***vkRe&fuHkjrk funl'kkd] tk dy jktLo 0;; l Lo;: dh jktLo ikfIr;k dk vuikr g] e l/kkj gvk g] tk vf/kd jktLo tVku d i;kl rFkk jktLo 0;; e deh dk |krd gA***

[पैरा 5.5.0 , सारणी क्र. 5.7]

8.2.5 ***jktLo ,o 0;; d ie[k vuikrk*** के अध्ययन से हमें ***LoLFk iofRr;k*** मिलती हैं। ***LoLFk iofRr;k g % jktLo 0;; d ifr'kr d :i e Lo;: dh ikfIr;k e l/kkj] dy 0;; d ifr'kr d :i e jktLo 0;; e deh rFkk dy 0;; d ifr'kr d :i e ithxr 0;; e of)A lkotfud _.k d lc/k e dfri; LoLFk iofRr;k g] de _.k l-jk-?k-m- vuikr rFkk pky vko';drkvk dh ifr d fy;: vFkik; vfxek dk mi;kx u djukA dy feykdj lkotfud _.k d {k= e jkT; dh fLFkfr l[kn ,o /kkj.kh; gA***

[पैरा 5.13.0, 5.14.0]

8.2.6 ***jktdk"kh; fu"iknu d nk lokf/kd egRoi.k ldrd g % jktLo ?kkVk@vfrjd ,o jktdk"kh; ?kkVkA bl nf"V l jkT; dh fLFkfr i;kIRk l[kn gA ;g cgrj lk/ku tVku rFkk jktLo 0;; dh of) ij vdq'k d :i e cgrj jktdk"kh; ic/ku d QyLo:i gA jktLo ?kkV dk Lrj*** बहुत अधिक नहीं है, वर्ष 2001–02 से 2005–06 के 5 वर्षो में से 1 वर्ष में राजस्व घाटा स.रा.घ.उ. के 1% से कम तथा 2 वर्षो में 2% से कम रहा है तथा अंतिम 2 वर्षों में राजस्व अतिरेक रहा है। यद्यपि ***jktdk"kh; ?kkVk*** तुलनात्मक रूप से अधिक है तथा यह 2002–03 के 3.08% से बढ़कर 2003–04 में 5.91% के अधिकतम स्तर के बाद इसमें कमी हुई है। राजस्व घाटा, राजकोषीय घाटे का एक अत्यंत छोटा भाग है, 3 वर्षो में से 1 वर्ष में 20% से कम, 1 वर्ष में 30% से कम, 1 वर्ष में 50% से कम तथा अंतिम 2 वर्षो में ***jktLo vfrjd*** रहा है। कुछ राज्यों में उनके संबंधित ***jktdk"kh; ?kkV e jktLo ?kkV*** का 70% से 80% तक का योगदान रहा है, जिसके कारण भयानक राजकोषीय स्थितियाँ निर्मित हुई हैं। हमारे मत में ऐसा उच्च राजकोषीय घाटा, जो पूँजीगत व्यय में वृद्धि के कारण उत्पन्न हुआ है तथा जो सतर्कतापूर्वक उत्पादक आस्तियों के निर्माण पर व्यय किया गया है, को वृद्धि एवं विकास के हित में औचित्यपूर्ण कहा जा सकता है।

[पैरा 5.5.3]

8.2.7 कुछ महत्वपूर्ण ***vLoLFk jktdk"kh; iofŸk;k***, जिन्हें रोकना एवं उलटना आवश्यक है, इस प्रकार हैं – ***dy jktLo ikfIr;k e Lo; d dj ,o Lo; d xj&dj jktLo dk ?kVrk gvk ifr'kr] jkT; dh dUnh; lgk;rk ij fuHkjrk e of)] tk lgk;rk&vunku d :i e de rFkk dUnh; djk e fgLlnkjh d :i e vf/kd g]*** कर संरचना में विविधता की कमी, जिसे राज्य के कुल स्वयं के राजस्व में मात्र एक ही कर – ***fcØh dj*** की प्रधानता प्रमाणित करती है तथा आर्थिक एवं सामाजिक सेवाओं के प्रदाय में सब्सिडी के बड़े अंश के कारण, ***jktLo d xj&dj lkrk*** से साधनों का कम एकत्रीकरण, ***lkekftd lokvk*** के मामलें में ***olyh vuikr*** 2001–02 के 1.33% से घटकर 2005–06 में 1.04% रह गया।

vkfFkd lokvk के मामले में यही अनुपात इसी अवधि में 5321% से घटकर 48. 95% रह गया।

[पैरा 5.8.2, 5.10.1, 5.11.1 एवं 5.11.6]

8.2.8 राज्य में ***jktLo 0;; dh jpuk*** के अध्ययन से हम पाते हैं, कि ***lkekftd lokvk dh ifr'kr fgLl*** में कमी हुई है। विशेष तौर से यह कमी ***lkoltfud LokLF; ,o nokbl;k] ty vkifr ,o lkQ lQkbl rFkk vulfpr tkfr ,o vulfpr tutkfr dk dY;k.k e gbl gA vkfFkd lokvk*** के क्षेत्र में ***flpkbl ,o l[kk jkgr rFkk ifjogu dk ifr'kr dh dy jktLo 0;;*** में कमी हुई है।

[पैरा 5.12.2, 5.12.3]

8.2.9 ***^^NRrhlx< jkT; dk jktLo ,o 0;; dk iokuekuA^*** नामक अगले अध्याय में ***iFkerk*** हमारे अपने पूर्वानुमान तैयार करने के पूर्व विभिन्न संगठनों के द्वारा किये गये पूर्वानुमान अभ्यासों की पर्याप्तता अथवा अपर्याप्तता की समीक्षा की गई है। ये पूर्व अभ्यास इन संगठनो के द्वारा किये गये हैं, ***jkT; ljdkj dk }kjk ¼XIIoa foRr vk;kx dk iLrr viu Le'fr i= e½] XIIok foRRk vk;kx ,o u'kuy dkmfUly vkQ vlykbM bdkukfed fjlp] ubl fnYyh dk }kjkA*** यद्यपि विचारधीन विषयों के अनुसार आयोग से केवल राजस्व लेखे के ***jktLo ,o 0;;*** के पूर्वानुमान तैयार करने की अपेक्षा की गई है। हमने अपने पूर्वानुमानों की सीमा में वृद्धि कर ***ithxr ikflr;k ,o 0;;*** को भी इसमें शामिल कर लिया है। इससे आयोग को, प्रक्षेपण अवधि के लिये, ***jktLo ?kkVk ,o jktdk"kh; ?kkVk*** ज्ञात करने में सुविधा हुई है। ***vkn'kd vk/kkj ij iokuekuk dk lc/k e vU; lxBuk dk }kjk viuk;h xbl dk;fof/k dh rqyuk e] bl vk;kx }kjk viuk;h x;h dk;fof/k] tk lcf/kr jktdk"kh; pjk dk voykfdr***

0;ogkj ij vk/kkfjr g\] tehuh okLrfodrkvk d vf/kd vu:i g rFkk blfy; dk;:i e ifjf.kr fd; tk ldu oky ifj.kke nrh g\] ;|fi mldh viuh lhek; ,o dfe;k gA

[i\jk 6-2-0] 6-3-0] 6-5-0] 6-6-0 ,o 6-7-0]

8.2.10 ***iokueku r;kj dju dh fn'kk e igy dne d :i e geu ogr nf"Vdk.k viuk;k rFkk l-jk-?k-m- d ifr'kr d :i e egRoi.k jktdk"kh; legk ,o mi legk d iokueku r;kj fd;A*** ये समूह हैं, ***Lo; dk dj l-jk-?k-m- vuikr] Lo; dk xj&dj l-jk-?k-m- vuikr ,o dy Lo; dk jktLo l-jk-?k-m- vuikrA*** जहाँ तक ***dUn l gLrkrj.kk*** का संबंध हैं, ***geu i{ki.k vof/k d fy; igy dUnh; gLrkUrj.k ;kX; jkf'k dk iokueku dj mle jkT; d v'k dk iokueku fd;k gA*** राज्य के ***Lo; d dj jktLo*** का 2005–06 में रूपये 3994.79 करोड़ से बढ़कर 2009–10 में रूपये 9571.23 करोड़ होना पूर्वानुमानित है। इसी अवधि में ***xj&dj jktLo*** रूपये 1480.28 करोड़ से बढ़कर रूपये 2968.46 करोड़ एवं ***dy Lo; dk jktLo*** रूपये 5475.07 करोड़ से बढ़कर रूपये 12539.69 करोड़ होने का अनुमान है। ***dy jktLo 0;;*** के व ि 2005–06 के रूपये 8531.04 करोड़ से बढ़कर 2009–10 में रूपये 18088.45 करोड़ होने का पूर्वानुमान है तथा यही, ***l-jk-?k-m- d ifr'kr*** के रूप में, 16.44% से बढ़कर 17.98% होने का पूर्वानुमान है। ***vkRe&fuHkjrk funl'kkd*** 2005–06 में 64.18% से सुधरकर 2009–10 में 69.32% होगा, ***tk bl ckr dk |krd g\] fd jkT; dk c<rk gvk jktLo 0;; dk ifr'kr] jkT; dh jktLo ikflr;k e of) d QyLo:i gkxkA***

[पैरा 6.7.2, 6.7.3, 6.8.0, 6.9.0 एवं सारणी क्र. 6.10]

8.2.11 ***jkT; foRr*** की हमारी ***iujpuk ;ktuk*** में ***ithxr 0;;*** में काफी वृद्धि की आशा की गई है तथा प्रक्षेपण अवधि में, इसके रूपये 2594.98 करोड़ से बढ़कर

रूपये 6238.55 करोड़ हो जाने का पूर्वानुमान है। पूँजी बाजार की उत्प्लावकता, मुद्रा बाजार में अधिक तरलता एवं उत्साहजनक ***jktdk"kh; LokLF;*** के फलस्वरूप राज्य की उधार लेने की अधिक क्षमता को ध्यान में रखते हुये, हमने उच्चतर पूँजीगत व्यय की पूर्ति के लिये अधिक पूँजीगत प्राप्तियों का पूर्वानुमान किया है। **lkj.kh Ø- 6-10 *jkT; dk jktLo ,oa iwathxr nkukas y[kkas dk jktLo ,oa 0;; dk iokZuqekuksa*** की विस्तृत एवं एकीकृत तस्वीर प्रस्तुत करती है। इन पूर्वानुमानों के आधार पर हमने प्रक्षेपण अवधि के लिये ***jktLo vfrjsd ,oa jktdk"kh; ?kkVs*** का आकलन किया है। पूर्व से ही ***jktLo vfrjsd*** वर्ष 2005–06 के ***l-jk-?k-m-*** के 0.75% से बढ़कर, 2009–10 में 2.58% हो जाने का पूर्वानुमान है। ***jktdk"kh; ?kkVs*** का 4.05% से घटकर ***l-jk-?k-m-*** के 2.98% होने का पूर्वानुमान है। इसे बढ़ते राजस्व अतिरेक से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। इस अध्याय के अंत में प्रक्षेपण अवधि के लिये, राज्य वित्त की पुनर्रचना की हमारी योजना एवं ***XII osa foRr vk;ksx*** द्वारा सुझायी योजना की तुलना की है। ***vuqd {ks=ksa esa jkT; dh jktdks"kh; fLFkfr XIIosa foRr vk;ksx }kjk inRr ;kstuk esa iwdfYir fLFkfr ls csgrj csgrj izrhr gksrh gSA***

[पैरा 6.13.0, सारणी क्र. 6.10, 6.11]

8.2.12 अंतिम अध्याय में हमने ***jktLo ,oa 0;; dk 0;fDrxr ?kVdksa ,oa iw{ki.k vof/k dk fy;s mudk iokZuqekuksa dk lanHkZ esa jkT; ljdkj dk foRr dh iqujZpuk dk lq>ko*** दिये हैं। ***geus 0;fDrxr djksa ls izkIr jktLo dk iokZuqekuq] fLFkfr dk vuqlkj djus ls'kks/kuksa*** के साथ, संबंधित ***iofr of) njksa ¼i-o-n-½*** के आधार पर किये हैं। कर संरचना में ***fcØh dj*** का सर्वोच्च स्थान निरंतर बना हुआ है। हम आशा करते हैं, कि ***fcØh dj dk LFkku ij eqY; of/kr dj*** आ जाने से राज्य न केवल देश के शेष राज्यों की श्रेणी में आ जायेगा, वरन् मध्यम काल में उसे राजस्व प्राप्तियों के मामलें में भी लाभ होगा। ***l-jk-?k-m- dk ifr'kr dk :i*** में ***fcØh dj*** से ***izkIr jktLo*** का अनुपात

2004–05 के 3.81% से बढ़कर 2009–10 से 5.72% का पूर्वानुमान है। हमने राजस्व बढ़ाने के उद्देश्य से राज्य की कर–संरचना में शामिल प्रत्येक कर की कुछ कमियाँ दूर करने के लिये सुधारों के सुझाव भी दिये हैं।

[पैरा 7.4.0]

8.2.13 हमने राज्य की ***IkekU; Iokvk] Ikekftd Iokvk ,o vkfFkd Iokvk*** तथा पृथक से, ***f'k{kk] Ikoltfud LokLF;] ty vkifrl ,o IkQ&IQkbl*** पर होने वाले ***ifr 0;fDr 0;;*** के अनुमान भी तैयार किये हैं। राज्य को ***f'k{kk] Ikoltfud LokLF;] ty vkifrl ,o IkQ&IQkb*** पर होने वाले ***ifr 0;fDr 0;;*** में मामले में अभी काफी रास्ता तय करना है। हमने राज्य के कुल राजस्व व्यय में, सामाजिक सेवाओं एवं आर्थिक सेवाओं पर सार्वजनिक व्यय में काफी अधिक वृद्धि का सुझाव दिया है। ***Ikekftd Iokvk d jktLo 0;;*** में 2004–05 के, स.रा.घ.उ. के 5.53% से बढ़कर 2009–10 में 7.67% तथा आर्थिक सेवाओं पर व्यय के 4.38% से बढ़कर 5.33% हो जाने का पूर्वानुमान है। हमने ***LFkkuh; fudk;k d fy;s Hkh vf/kd vkcVu*** का प्रावधान किया है, जिससे राज्य सरकार, राज्य के प्रथम राज्य वित्त आयोग के प्रतिवेदन को क्रियान्वित करने के लिये, अधिक राशियों का प्रावधान कर सके। हमारे पूर्वानुमानों के अनुसार प्रक्षेपण अवधि में कुल राजस्व व्यय में ***IkekU; Iokvk dk ifr'kr v'k*** 2004–05 के 35.11% से घटकर 2009–10 में 22.55%, ***Ikekftd Iokvk*** का अंश 34.22% से बढ़कर 42.65%, ***vkfFkd Iokvk*** का 27.11% से बढ़कर 29.62% एवं ***LFkkuh; fudk;k*** के लिये 3.55% से 5.18% हो जाने का पूर्वानुमान है।

[पैरा 7.10.3, 7.10.4, सारणी क्र. 7.8, 7.9 एवं 7.11]

8.2.14 वर्ष 2004—05 की तुलना में 2009—10 के ***ifr0;fDr 0;;*** पर पूर्वानुमानित राजस्व व्यय के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। शिक्षा पर होने वाले ***ifr 0;fDr 0;;*** में सर्वाधिक प्रतिशत वृद्धि होने की संभावना है (239.47%), जिसके बाद समूह वार क्रमशः सामाजिक सेवायें, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आर्थिक सेवायें, सामान्य सेवायें एवं जल आपूर्ति एवं सफाई का स्थान होगा। इन्हें प्रति व्यक्ति व्यय के ऐसे लक्ष्य माना जा सकता है, जिन्हें राज्य सरकार को प्रक्षेपण अवधि में प्राप्त करना होगा।

[पैरा 7.10.7, सारणी क्र. 7.15]

8.2.15 हमने ***ithxr 0;; ,o mld ?kVdk d iokueku Hkh r;kj fd; gA l- jk-?k-m- d ifr'kr*** के रूप में इस व्यय में वर्ष 2004—05 के 3.17% से बढ़कर 2009—10 में 6.20% होने का पूर्वानुमान है। इस वृद्धि का अधिकांश भाग ***vkfFkd lokvk*** में होगा तथा उसके बाद ***lkekftd lokvk*** में सबसे कम वृद्धि ***lkekU; lokvk*** में होगी।

[पैरा 7.12.0, सारणी क्र. 7.16]

8.2.16 इस प्रतिवेदन के अध्याय 7 में ***jkT; foRr dh iujpuk dk;Øe d ?kVd d :i e geu dN ctVh; l/kkjk dk l>ko fn;k gA***

[पैरा 7.13.0]